जे. कृष्णमूर्ति

स्वतंत्रता, उत्तरदायित्व एवं अनुशासन

H
181.49 K 897 S

INDIAN INSTITUTE
OF
ADVANCED STUDY
LIBRARY, SHIMLA

स्वतन्त्रता, उत्तरदायित्व एवं अनुशासन

17 दिसम्बर 1980 को 'ऋषि वैली स्कूल'
के विद्यार्थियों के साथ हुई वार्ता

जे० कृष्णमूर्ति

अनुवाद
महादेव राम विश्वकर्मा

जे० कृष्णमूर्ति प्रज्ञा परिषद्
कृष्णमूर्ति फ़ाउण्डेशन इण्डिया
राजघाट फ़ोर्ट, वाराणसी

Swatantrata, Uttardayithva Evam Anushasan - J. Krishnamurti

Hindi Translation of *Freedom, Responsibility & Discipline*
Translated by : *Mahadev Ram Vishwakarma*

Authorised by Krishnamurti Foundation India

Library IIAS, Shimla
H 181.49 K 897 S

G6087

© 1995 Krishnamurti Foundation India
Vasanta Vihar, 64-65, Greenways Road, Chennai 600 028
email : kfihq@md2.vsnl.net.in

First Reprint in 2000

Published by
J. Krishnamurti Prajna Parishad
Krishnamurti Foundation India, Rajghat Fort, Varanasi 221 001
email : kcentrevns@satyam.net.in

Printed by
Sattanam Printers
Pandeypur, Varanasi.

जे० कृष्णमूर्ति (कृ): हम लोग किसके बारे में बातचीत करें?

विद्यार्थी (वि) : सर, हम लोगों ने पिछली बार जहाँ बातचीत खत्म की थी क्या वहीं से आगे बढ़ें?

कृ : हम लोगों ने कहाँ बात खत्म की थी?

वि : सर, हम लोग असुरक्षा के सम्बन्ध में बातचीत कर रहे थे। मैंने कहा था कि जब हम लोग किसी चीज के प्रति सचेत होते हैं तो उस समय हम बहुत असुरक्षित होते हैं। वहीं हम लोग रुक गये थे।

कृ : जिसके बारे में हम बात करने जा रहे हैं, शायद उससे हम इसका सम्बन्ध जोड़ सकते हैं। मैं, समझता हूँ जीवन में मुक्ति, उत्तरदायित्व और अनुशासन, इन तीन बातों को समझना बहुत महत्त्वपूर्ण है। हममें से अधिकांश यह सोचते हैं कि हम स्वतन्त्र हैं। यह सोचते हुए कि हम स्वतन्त्र हैं, हम जो कुछ भी चाहें वही करना चाहते हैं। परन्तु क्या हम स्वतन्त्र हैं? यह एक बातचीत है। हम और आप इन बातों पर साथ-साथ वार्तालाप कर रहे हैं। क्या हम जरा भी स्वतन्त्र हैं? यह स्वतन्त्रता मात्र एक विचार है, वास्तविकता नहीं? हम सभी मानते हैं कि स्वतन्त्रता का अस्तित्व तब होता है जब हम चुनाव कर सकते हैं।

चूँकि हम चुनाव कर सकते हैं अत: हम सोचते हैं कि हम स्वतन्त्र हैं। भारत में हम एक नगर से दूसरे नगर तक जा सकते हैं, एक काम को छोड़कर दूसरा काम कर सकते हैं, जब चाहे अपना पेशा बदल सकते हैं, चाहे तो संन्यासी भी बन सकते हैं। तो हम इस प्रकार सोचते हैं कि हम मुक्त हैं, क्योंकि हम यह या वह चुनने की क्षमता रखते हैं और हम यह भी सोचते हैं कि हम आन्तरिक और मनोवैज्ञानिक स्तर पर भी स्वतन्त्र हैं। परन्तु हम पूछ रहे हैं कि क्या हम जरा भी स्वतन्त्र हैं या सिर्फ बँधे हुए (प्रोग्रैम्ड) हैं? क्या 'बँधे' होने का अर्थ आप समझ रहे हैं? हिन्दू, मुस्लिम, ईसाई बने रहने के लिए हमें संस्कारों से बाँधा गया है। कम्युनिस्ट, समाजवादी या पूँजीवादी होने के लिए भी हमें बाँधा गया है। इस तरह हमारा मन प्रतिबंधित हो जाता है, हम कम्प्यूटर के पूर्व-निर्मित कार्यक्रम की तरह बँध जाते हैं। जब हमारा मन प्रतिबंधित हो जाता है, तब वह कहता है, 'मैं हिन्दू हूँ', 'मैं मुसलमान हूँ', 'मैं ईसाई हूँ', 'मैं बौद्ध हूँ', 'मैं यह हूँ', 'मैं वह हूँ'। इसलिए वह मुक्त नहीं होता, वह मात्र दोहराता है। इसे समझिए। एक मुक्त मन केवल वह मन है जो सभी पूर्वनिर्मित अनुग्रहों (प्रोग्रैम्स) से मुक्त है। चूँकि हम बंधन में हैं इसलिए मुक्त होना चाहते हैं। परन्तु वह विपरीत दशा मुक्ति नहीं है। क्या आप यह सब समझ रहे है? ज़रा सोचिए। एक मन केवल तभी मुक्त होता है जब वह पूर्वनिर्मित बंधनों में, किसी निष्कर्ष में, किसी विश्वास में, किसी आसक्ति की पकड़ में नहीं है। मैं इस विचार से जुड़ा हूँ कि 'ईश्वर है' और मैं यह विश्वास भी करता हूँ कि मैं सही हूँ, मैं

कहता हूँ, 'मेरा अनुभव मुझे ऐसा ही बताता है' ये सभी कारक हैं जो संकेत करते हैं कि मन मुक्त नहीं है। और मुक्त नहीं होने के कारण हम मुक्त होना चाहते हैं। इसका अर्थ यह हुआ कि मैं कारागार में हूँ और मैं महसूस करता हूँ कि मुझे इससे कैसे भी बच निकलना चाहिए, इससे किसी भी तरह छुटकारा पा लेना चाहिए। तब मुक्ति हमारे लिए एक लक्ष्य की तरह हो जाती है— क्योंकि उस समय मैं एक बन्धक हूँ।

वि : आप उस बन्धन से निकल जाना चाहते हैं।

कृ : हाँ।

वि : और वही आपके लिए मुक्ति है।

कृ : परन्तु अगर मैं कारागार में नहीं हूँ तो मैं स्वतन्त्र हूँ। मैं तब स्वतन्त्रता नहीं खोजता हूँ। यदि मैं अपने बंधन की सीमाओं अर्थात् विश्वास, पूर्वाग्रह, मताग्रह, आसक्ति आदि को जानता हूँ और मैं उन सभी से स्वतन्त्र हूँ, तो मैं स्वतंत्र हूँ। मैं तब स्वतंत्रता की खोज नहीं करता। क्या आप समझ रहे हैं?

वि : तब आप पहले से ही कारागार से बाहर हैं।

कृ : तब मैं स्वतंत्रता के बारे में बात भी नहीं करता।

वि : सर, क्या आप यह कह रहे हैं कि यदि हम कारागार से बाहर निकलने का प्रयास करते हैं, तब भी हम कारागार के अन्दर रहते हैं?

कृ : सर, आपने सुना मैंने क्या कहा? कारागार में रहने के कारण

मैं सदा स्वतंत्रता खोजता रहता हूँ। परन्तु मैं अपने कारागार के स्वरूप को समझता नहीं हूँ। जब मैं उसे समझ लेता हूँ और बंधन की स्थिति से मुक्त हो जाता हूँ, तो वहाँ मुक्ति होती है। तब मुझे उसे खोजना नहीं पड़ता है। यह समझना महत्त्वपूर्ण है, क्योंकि संसार का प्रत्येक व्यक्ति सोचता है कि वह स्वतंत्र है और इस तरह समाज में हर प्रकार के विरोधाभास हैं। प्रत्येक व्यक्ति जो चाहता है वही करता है, इसलिए एक-दूसरे के बीच कलह है। रूस और चीन जैसे एकतंत्रात्मक देशों में सरकार कहती है कि आप स्वतंत्र नहीं हैं, आपको वही करना चाहिए जो हम आपसे कहते हैं। परन्तु मन सदा स्वतंत्रता खोजता है— पीड़ा से मुक्ति, दुःख से मुक्ति, चिन्ता से मुक्ति। यही सब है जिसे मन हर समय कर रहा है, वह हर समस्या, हर बोझ, हर शारीरिक और मानसिक कष्ट से मुक्त होना चाहता है। तो क्या आप समझते हैं कि स्वतंत्रता क्या है? अर्थात् यदि मैं किसी विश्वास, किसी व्यक्ति, किसी भवन के प्रति आसक्त हूँ तो मैं मुक्त नहीं हूँ। वह आसक्ति ही मैं हूँ, ठीक? मैं ही धारणा हूँ। मैं ही हिन्दू हूँ। मैं ईश्वर में विश्वास करता हूँ। मैं ही इस स्थान से आसक्त हूँ। मैं ही अपनी पत्नी से आसक्त हूँ। मैं ही अपने विश्वास से आसक्त हूँ। तो पहले हर व्यक्ति को यह अवश्य खोजना चाहिए कि मुक्ति क्या है, जैसा कि अभी हमने किया है। सम्पूर्ण संसार का प्रत्येक मानव क्यों किसी ईश्वर, किसी धारणा, किसी भवन, अपनी पत्नियों, अपने परिवारों, अपने अनुभवों के प्रति आसक्त है? क्यों? आप भी किसी वस्तु से आसक्त हैं। हैं न?

वि : हाँ, सर।

कृ : क्यों?

वि : इससे हमें सुरक्षा मिलती है।

कृ : आपने कहा कि आसक्ति में आप सुरक्षा पाते हैं। ज़रा आहिस्तां चलें। इस पर पूरा विचार करें। मैं इस भवन से आसक्त हूँ क्योंकि भवन में सुरक्षा है। भवन मुझे सुरक्षा देता है, और उससे मैं आसक्त हूँ, उस आसक्ति में सुरक्षा पाता हूँ और मैं किसी धारणा से भी आसक्त हूँ।

वि : और उस विश्वास में आप सुरक्षा पाते हैं।

कृ : मैं वहाँ सुरक्षा पाता हूँ।

वि : सर, यदि मैं आसक्त हूँ तो मुझे सुरक्षा नहीं मिलती है क्योंकि आसक्ति की वस्तु से वंचित हो जाने का भय बना रहता है और जहाँ भय है वहाँ सुरक्षा नहीं होती।

कृ : क्या आपने यह सब समझ लिया है?

वि : हाँ, कोई सुरक्षा नहीं होती।

कृ : इसे समझिए, यह मत कहिए कोई सुरक्षा नहीं है। मैं मानता हूँ कि स्वर्ग है और आप आते हैं और कहते हैं क्या बेतुकी बातें करते हो— परन्तु मैं इतना जकड़ा हुआ हूँ, इतने गहरे प्रतिबंधन में हूँ कि मैं आपको सुनने से भी इनकार कर देता हूँ।

वि : परन्तु इसी के साथ आप हिल भी तो जाते हैं, सर!

कृ : *केवल तभी जब मैं उस बात को वास्तव में लेता हूँ।* तब वह मुझे आन्दोलित करने लगती है। अगर मैं जीवन्त हूँ तो अपने विश्वासों के बारे में प्रश्न करना आरंभ कर देता हूँ। परन्तु यदि मैं मृतप्राय हूँ तो मैं सुनता भी नहीं। परन्तु जिस क्षण मैं सुनता हूँ, जिस क्षण में पढ़ता हूँ, जिस क्षण मैं संदेह से भर जाता हूँ तो वह चीज अपनी पकड़ खोने लगती है। किसी विश्वास में, किसी भ्रम में मैंने सुरक्षा खोजी है। परन्तु अब मैं पाता हूँ कि वहाँ कोई सुरक्षा नहीं है, तो मैं अनिश्चितता की स्थिति में आ जाता हूँ। इसका मतलब है कि मैं सजग हो रहा हूँ कि मेरी धारणाओं, मेरे अंधविश्वासों, मेरे भ्रमों में किसी प्रकार की सुरक्षा नहीं है। तब मैं बहुत अनिश्चितता का अनुभव करने लगता हूँ, मैं अपनी अनिश्चितता के प्रति सजग हो जाता हूँ। तब क्या होता है? इसे सावधानी से सोचिए।

वि : सर, तब मैं किसी दूसरी चीज में सुरक्षा पाने का प्रयास करता हूँ।

कृ : देखिए, मैं अशांत हूँ इसलिए मैं अनिश्चित हो जाता हूँ। अशांत होना मेरे अनिश्चित होने का संकेत है। तो अनिश्चितता की स्थिति में मन में क्या होता है? मुझे उत्तर मत दीजिए। अपने मन का अवलोकन करिए।

वि : सर, जब मैं देखता हूँ कि मेरा मन अनिश्चित है तो मैं दो

चीजें कर सकता हूँ। पहली चीज कि मैं दूसरे प्रकार की सुरक्षा खोजने लगता हूँ अथवा मैं यह देखता हूँ कि सुरक्षा की खोज मुझे किसी प्रकार की सुरक्षा प्रदान नहीं करती, अर्थात् सुरक्षा की खोज ही गलत है।

कृ : फिलहाल 'गलत' या 'सही' शब्द का प्रयोग मत करिए। हम लोग खोज कर रहे हैं। क्या आपने पाया है कि अनिश्चितता की स्थिति है? पहले आप निश्चित थे, अब आप अनिश्चित हो गये हैं। क्यों?

वि : क्योंकि आपसे प्रश्न किया गया है।

कृ : 'क्योंकि आपसे प्रश्न किया गया है' इसका क्या मतलब है?

वि : सर, क्या इसका अर्थ यह हुआ कि बंधन से मुक्त होने का यह पहला चरण है?

कृ : देखिए, आप सावधानी से अवलोकन नहीं कर रहे हैं। मैं अपनी भक्ति, अपने ईश्वर, अपने स्वर्ग के प्रति निश्चित रहा हूँ। इसने मुझे तसल्ली दी है। आप आते हैं और कहते हैं कि यह सब कैसी बेतुकी बातें हैं। मैं अशांत हो जाता हूँ और मैं प्रश्न करने लगता हूँ कि मैं क्यों अशांत हो गया हूँ। ठीक?

वि : हाँ, सर।

कृ : पहले मैंने कभी प्रश्न नहीं किया। अब मैं प्रश्न कर रहा हूँ। ठीक? अब आपकी क्या मनः स्थिति है जब आप प्रश्न कर रहे हैं?

वि : सर, जब मन प्रश्न कर रहा है तो वह किसी मत से चिपका हुआ नहीं है।

कृ : नहीं, आपने मेरे प्रश्न को नहीं समझा। आपके मन की क्या स्थिति होती है जब वह प्रश्न आरंभ करता है?

वि : सतर्क।

कृ : जागृत है न?

वि : हाँ, सर।

कृ : सतर्क, सजग। आरंभ में इसने स्वीकार किया और सो गया। इसने कहा 'स्वर्ग है, ईश्वर है, पूजा है, यह है, वह है, मैं बहुत प्रसन्न हूँ' अर्थात मैं मन्द, निद्रित, निःसंदिग्ध था। ठीक? परन्तु जिस क्षण मैं प्रश्न करता हूँ, मैं जागृत होने लगता हूँ। अब इसका क्या मतलब है?

वि : स्वयं के लिए आपने सोचना आरंभ कर दिया है।

कृ : सावधानी बरतिए 'स्वयं के लिए सोचना'— यह एक खतरनाक वक्तव्य है। स्वयं के प्रति सोचने जैसी कोई चीज नहीं है। यहाँ केवल सोच-विचार है। यहाँ समझने में बड़ी कठिनाई है, मैं आपको धीरे-धीरे ले चलूँगा। मैं अपनी मतान्धता में संतुष्ट और बहुत प्रसन्न रहा हूँ। आप मुझसे प्रश्न करते हैं, मेरे मन में संदेह के बीज बोते हैं। तब क्या होता है? मैं जाग जाता हूँ। इसका क्या तात्पर्य है? उस मन को क्या हो गया है जिसने विश्वास किया था और अब प्रश्न करने लगा है?

वि : आपने सोचा था कि अपनी उस धारणा में आप सुरक्षित हैं। परन्तु जैसे-ही उस धारणा पर प्रश्न-चिन्ह लग जाता है, आप झकझोर दिए जाते हैं, वह आपके पास नहीं रहती।

कृ : उसका क्या मतलब है?

वि : आप पुनः असुरक्षित हो गये।

कृ : हाँ, मैंने यही कहा। मैं आपसे पूछ रहा हूँ, जब आप प्रश्न कर रहे होते हैं, संदेह कर रहे होते हैं, तो उसका क्या संकेत होता है?

वि : सर, हमने अभी कहा कि यह जागृति का संकेत होता है।

कृ : ठीक है। मैं निद्रा में रहा हूँ और आपने आकर मुझे जगाया। यह जागरण प्रज्ञा का आरंभ है। ठीक?

वि : हाँ।

कृ : 'मैं यह हूँ, मैं अनिश्चित हूँ', कहने के बजाय आपने यही क्यों नहीं कहा? वह मन जो प्रश्न नहीं करता, संदेह नहीं करता, माँग नहीं करता, आपत्ति नहीं करता, निद्रा में होता है। परन्तु जब वह चुनौती प्रस्तुत कर रहा है, प्रश्न कर रहा है, माँग कर रहा है...

वि : तब वह जागृत है।

कृ : तब यह जागृत है। जिसका अर्थ प्रज्ञा का आरंभ होना है। समझे आप? क्या आपके पास वह प्रज्ञा है? क्या वह प्रज्ञा कार्य कर रही है? तब आप कभी भी कोई चीज स्वीकार नहीं कर पायेंगे, बल्कि प्रश्न करेंगे, खोज करेंगे जिससे आपका मन सदा जाग्रत रहेगा। ठीक? तब

आप केवल परीक्षा उत्तीर्ण कर किसी छोटे-मोटे काम में लगकर सड़ेंगे नहीं। मुक्ति का क्या अर्थ है, क्या अब आप समझे? अर्थात् अब आप अपने बंधन, अपने समाज, अपने धर्म, अपने गुरु पर संदेह कर रहे हैं। तब आप जान पाते हैं कि मुक्ति क्या है, यह नहीं कि कैसे मुक्त हुआ जाए।

अब, क्या आप जानते हैं कि जिम्मेदार होने का क्या मतलब है? एक अध्यापक के रूप में, एक शिक्षक के रूप में, आपसे इतिहास के तथ्यों को बताने के लिए मैं उत्तरदायी हूँ। वह मेरी जिम्मेदारी है।

वि : सर, क्या आप कह सकते हैं कि एक तरह से वह आपका कर्त्तव्य है?

कृ : नहीं, मैं 'कर्त्तव्य' शब्द का प्रयोग नहीं करूँगा। मैं आपसे तथ्यों को कहने के लिए उत्तरदायी हूँ न कि अपने पूर्वाग्रहों को। यदि मेरे बच्चे हैं तो उनकी शिक्षा के लिए मैं जिम्मेदार हूँ। मैं यह देखने के लिए जिम्मेदार हूँ कि उन्हें अच्छा भोजन मिले। अगर मैं यहाँ हूँ तो यह देखना मेरी जिम्मेदारी है कि आप संसार एवं प्रकृति का अवलोकन करें। क्या आप जिम्मेदारी शब्द का मतलब समझते हैं?

वि : परन्तु आप क्यों नहीं कहते कि यह 'कर्त्तव्य' है।

कृ : कर्त्तव्य क्या है?

वि : ऐसा कुछ जिसको करने के लिए आप बाध्य हैं।

कृ : एक मिनट रुकिए। देश के प्रति मेरा कर्त्तव्य है— ठीक?

मैं एक सिपाही हूँ, और मेरा अधिकारी जो कुछ कहता है उसकी आज्ञा का पालन करना मेरा कर्त्तव्य है। यहाँ मैं कर्त्तव्य को स्वीकार नहीं करता। मैं जिम्मेदार हूँ।

वि : हाँ।

कृ : क्या आप इस सूक्ष्म अन्तर को समझते हैं? जब मैं यहाँ हूँ, मैं इस जिम्मेदारी का अनुभव करता हूँ कि 'ऋषि वैली' पृथ्वी पर सबसे सुन्दर स्थान बने, जहाँ आप लोग विकसित, पुष्पित, प्रज्ञावान हों। थोड़ा आगे बढ़िए— जो कुछ भी मैं करता हूँ उसके लिए मैं पूर्णत: जिम्मेदार हूँ।

वि : सर, क्या जिम्मेदारी का अर्थ सजगता है?

कृ : अब आप सजगता को बातचीत में ला रहे हैं। फिलहाल मैं उसमें नहीं जाना चाहता हूँ। मैं जिम्मेदार हूँ यह देखने के लिए कि आप विद्यार्थियों को अच्छा भोजन मिले, अच्छा वस्त्र मिले, अच्छा व्यवहार मिले, कि आप ठीक से अंग्रेजी बोलें, कि आप घाटी के सौन्दर्य का अवलोकन करें और आप संवेदनशील हों। क्या आप समझ रहे हैं? अब यह एक चीज है कि मैं आपके प्रति जिम्मेदार हूँ। और मैं स्वयं के लिए भी पूर्णत: जिम्मेदार हूँ। इसका मतलब हुआ मैं समाज पर आश्रित नहीं हो रहा है...

वि : अथवा किसी पर भी ...

कृ : किसी पर भी। मैं अपने लिए, अपने व्यवहार के लिए

जिम्मेदार हूँ। मैं बहाने नहीं बना रहा हूँ। मैं नहीं कहता, मेरे पिता जिम्मेदार हैं, मेरी दादी जिम्मेदार है, फिर मैं इसके बारे में क्या कर सकता हूँ? समाज मुझसे यह करने की अपेक्षा करता है। पता नहीं आप, इसे समझ पा रहे हैं या नहीं। देखिए, हम मनुष्यों ने ही इस समाज का निर्माण किया है। भ्रष्टाचार, अन्याय, दरिद्रता— यह सब कुछ हम मानव द्वारा ही निर्मित है और इसे जन्म न देने के लिए मुझे अवश्य जिम्मेदार होना पड़ेगा। इसका मतलब भ्रष्ट न होने के लिए मैं स्वयं के प्रति जिम्मेदार हूँ।

वि : ऐसे समाज के साथ न चलने के लिए भी।

कृ : मुझे यह नहीं कहना, 'मेरे पिता मुझसे यह करने की अपेक्षा करते हैं, मुझे यह करना है', या इसलिए समाज कहता है 'मुझे यह अवश्य करना है'। मैं स्वयं के लिए पूरी तरह जिम्मेदार हूँ, मैं स्वयं के लिए पूरी तरह विचार कर रहा हूँ। मैं उसे नहीं दोहराता कि कोई क्या कहता है। वे दूसरे दर्जे के लोग हैं जो गैर-जिम्मेदार हैं।

वि : सर, आपका मतलब है कि मुझे स्वयं ही यह खोज करनी चाहिए।

कृ : हाँ, परन्तु अभी हम सभी दूसरे दर्जे के लोग हैं। क्योंकि हम उसी को दोहराते हैं जो दूसरे लोगों ने कहा है। दूसरों ने कहा, 'मैं ईश्वर में विश्वास करता हूँ' इसलिए आप भी कहते हैं, 'मैं ईश्वर में आस्था रखता हूँ।'

वि : सर, क्या अभी बदलाव हो सकता है?

कृ : इसे अभी करिए जबकि मैं आपसे बातकर रहा हूँ। पूरी तरह जिम्मेदार बनिये जिससे कि आपके अध्यापक को आपसे कहना न पड़े, 'सात बजे उठ जाइये'। आप अपने-से सात बजे उठ जाते हैं। आप नियमित हैं, आप ठीक से खाते हैं, अच्छी अंग्रेजी बोलते हैं, क्योंकि आप स्वयं के प्रति पूर्णत: जिम्मेदार हैं। यह आपको अत्यधिक जीवंतता प्रदान करती है। इसे करिए। तो स्वतंत्रता और जिम्मेदारी साथ-साथ चलती है। अब अनुशासन ('डिसिप्लिन') के बारे में क्या आप जानते हैं इस शब्द का क्या मतलब है?

वि : व्यवस्था, सर?

कृ : नहीं। यह 'शिष्य' ('डिसाइपल') शब्द से आता है। शिष्य वह है जो सीखता है, न कि आज्ञा मानता है। शिष्य वह है जो निरन्तर सजग है, सीख रहा है, सीख रहा है, लगातार सीख रहा है— अनुकरण नहीं कर रहा है, नकल नहीं कर रहा है, आज्ञा-पालन नहीं कर रहा है। *जिम्मेदार होना अनुशासन है।* शिष्य सीखता है। जब आप जिम्मेदार होते हैं, आप...

वि : आप सीखते हैं।

कृ : क्या आपने बात को समझा ? देखिए सर, मैं एक बढ़ई के यहाँ काम सीख रहा हूँ। मैं एक कुशल बढ़ई से सीख रहा हूँ। वह कहता है, 'अपने औजारों को साफ रखिए; पेंचकस का ठीक से प्रयोग

करिए'। तो मैं यन्त्रों का ठीक से प्रयोग करना सीख रहा हूँ। इस प्रकार का प्रयोग स्वयं अपनी 'सीख' लाता है। अगर मुझे कार चलानी है, तो मुझे यह अवश्य जानना चाहिए कि इसे कैसे सँभाला जाए, कब ब्रेक लगाया जाए। अत: यह सीखना ही सही क्रिया को जन्म देता है। यदि मैं शिथिलता बरतता हूँ तो मैं मारा जाता हूँ। अर्थात् जिम्मेदार होने के लिए यह आवश्यक है कि मैं सीखूँ और सीखने के लिए मेरा दिमाग निश्चित ही तेज और सतर्क होना चाहिए। इस प्रकार सीखना स्वयं अपना अनुशासन है। मन्द-बुद्धि को बताना पड़ता है, धक्का देना पड़ता है। क्या आप इसे करेंगे? यह मत कहिए, 'मैं समझता हूँ'। इसका मतलब यह कहना मात्र है— हाँ, मैं आपसे सहमत हूँ। अपितु यह देखिए कि मुक्ति, उत्तरदायित्व और अनुशासन क्या हैं? ये सभी साथ हैं, अलग नहीं, यह एक-ही असाधारण गति में।

वि : सर, क्या आप यह कह रहे हैं कि चूँकि मैं उत्तरदायी हूँ, अत: सीखना मेरे लिए अनुशासन है?

कृ : मैंने यही कहा। देखिए, चूँकि इस स्थान के लिए और स्वयं के लिए आप जिम्मेदार हैं, जो जब आप कागज का एक टुकड़ा सड़क पर देखते हैं, आप उसे उठा लेते हैं। यह 'उठाना' अनुशासन है। मैंने 'अनुशासन' शब्द का प्रयोग भिन्न अर्थ में किया है। पहले मैं ध्यान नहीं देता था, अब मैं ध्यान दे रहा हूँ। तो पूरे जीवन भर मुक्ति, उत्तरदायित्व एवं अनुशासन— ये तीन मुख्य काम करते हैं। और इसके बाद आपको पता चलेगा कि आप बिना किसी अन्तर्द्वन्द्व के जी सकते हैं।

वि : सर, आपने कहा कि सीखना अनुशासन है। कागज उठा लेने की क्रिया अनुशासन है।

कृ : नहीं, कागज उठाना आपकी जिम्मेदारी है। क्योंकि आप चिन्ता करते हैं, आप ध्यानपूर्वक देख रहे हैं, आप सतर्क हैं, आप संवेदनशील हैं, इसलिए आप उसे उठा लेते हैं। चूँकि आप जिम्मेदार हैं, आप उसे करते हैं। तो अब आपका मन प्रशिक्षित हो रहा है।

वि : सर, क्या अनुशासन यही है— प्रशिक्षित होना?

कृ : प्रशिक्षित इस अर्थ में कि यह प्रत्येक चीज को ध्यान से देख रहा है। यह वृक्षों, पक्षियों, आते-जाते लोगों, गरीबों को ध्यान से देख रहा है और आप क्रियाशील हैं। आप केवल देखते हुए यह नहीं कह रहे कि मैं कुछ नहीं करूँगा। तो यदि मैं बहुत विनम्रता से आपसे पूछूँ कि क्या आपने यह जाना कि मुक्त होना क्या है? क्या आपने जाना कि मुक्ति क्या है? आपने जाना कि बंधन के प्रति सजग होना और बंधन से मुक्त होना क्या है?

वि : ज्योंही आप बंधन के प्रति सजग हो जाते हैं त्योंही आप उसके बाहर हो जाते हैं।

कृ : बिल्कुल सही। तो क्या आप सजग और जिम्मेदार हैं? कभी मत कहिए 'यह मेरा कर्म है' या 'मेरे माता-पिता यह चाहते हैं' या 'समाज कहता है मुझे इन्जीनियर अवश्य बनना चाहिए'। ठीक? आप जिम्मेदार हैं। जो कुछ सही है आप कर रहे हैं। मैं 'सही' शब्द का प्रयोग

सावधानीपूर्वक कर रहा हूँ। जैसा कि हम लोगों ने कल चर्चा की— जो सही है वह समग्र है, आंशिक नहीं है। क्या आप इसे समझ रहे हैं?

वि : जब मैं अपने परिवेश की प्रत्येक चीज के प्रति सजग होता हूँ तो मैं इसके लिए बिल्कुल जिम्मेदार हो जाता हूँ। तब मैं अपनी तरफ से किसी चीज के प्रति किसी प्रकार की शिथिलता, किसी प्रकार की लापरवाही नहीं आने देता हूँ।

कृ : यह सही है।

वि : और इस प्रकार स्पष्ट रूप से जो कुछ मैं करता हूँ वह परिपूर्ण होता है।

कृ : नहीं, जो कुछ भी आप करते हैं अवश्य ही समग्र (whole) होना चाहिए। मैने कहा था जो कुछ आप करते हैं वह अवश्य ही सम्यक् होना चाहिए। मैं 'सम्यक्' शब्द की गहराई में जा रहा हूँ। 'सम्यक्' का मतलब है जो खण्डित नहीं है— एक कर्म करना और तभी उसके विपरीत कर्म करना— यह अन्तर्विरोध है; खण्डों में बँटा हुआ है। जो समग्र है वही सम्यक् है। जो विखण्डित है वह गलत है। पूरा विश्व राष्ट्रीयताओं में, विभिन्न प्रकार के धर्मों में विभक्त है। एक राष्ट्र दूसरे से लड़ रहा है। यह विखण्डित होने की प्रक्रिया है। यह मानव-मन को विखण्डित कर रही है।

वि : हाँ, सर।

कृ : तो वह गलत कार्य है। लेकिन यदि आप राष्ट्रवादी नहीं हैं,

यदि आप साम्प्रादायिक भावना नहीं रखते, अपितु समष्टिगत दृष्टिकोण रखते हैं, जो समग्र है— तब वह ठीक क्रिया है। आप सभी लोग, कृपया इसे जरुर समझें, तभी आप सुखमय जीवन व्यतीत कर सकेंगे। आप द्वन्द्व में नहीं रहेंगे, आप अप्रसन्न नहीं रहेंगे। आपके पास प्रचुर मात्रा में ऊर्जा होगी। शरारत करने के लिए नहीं (हँसते हैं)। तो क्या आपने जीवन के तीन कारकों— मुक्ति, उत्तरदायित्व और इस प्रकार सीखना, इनको समझ लिया? आप सीखना कभी भी बन्द मत करियेगा। एक बहुत प्रसिद्ध स्पेनिश चित्रकार गोया हुआ है, उसने अद्भुत चित्रकारी की है— पञ्चानबे (95) की उम्र में उसने कहा, 'मैं अब भी सीख रहा हूँ'। क्या आप समझते हैं कि मैं क्या कह रहा हूँ?

वि : हाँ, सर।

कृ : तो क्या, अपनी इस उम्र में, आप सीख रहे हैं?

वि : मैं ऐसा नहीं सोचता, सर।

कृ : केवल पुस्तकों से सीखना नहीं, अपितु ध्यानपूर्वक देखते हुए सीखना।

वि : मुझे इसमें सन्देह है।

कृ : यह बहुत ही सीधी बात है— प्रश्न करके, पूछताछ करके, चुनौतियों के द्वारा सीखना। आपको प्रश्न करने के लिए 'डेमोक्रेसी बोर्ड' मिला है। उन पर सवाल रखें और नीचे अपने हस्ताक्षर करें— अपने को गुमनाम कभी न रखें। जो कुछ आप कहते हैं उसके लिए जिम्मेदार

बनिए, केवल विद्यार्थी ही नहीं अपितु शिक्षक भी। पूरे स्थान को जीवन्त रखिए।

क्या आप लोगों में से कोई किसी प्रकार का 'ध्यान' करता है? अपने कमरे में, वृक्ष के नीचे, बेञ्च पर शांतिपूर्वक बैठना या बिना बातचीत किए शांतिपूर्वक टहलना, अवलोकन करना? क्या आपने कभी यह सब किया है?

वि : हाँ, सर, केवल कभी-कभी।

कृ : ओह! यह तो कभी-कभी भोजन लेने जैसा है।

वि : आपका ध्यान से क्या मतलब है?

कृ : मैंने कहा तो, शांत होना। मैं ध्यान के बहुत जटिल कारोबार में नहीं जाऊँगा। परन्तु बहुत शांतिपूर्ण होने से आरंभ करिए— मन भी बिल्कुल शांत हो, हर समय सोच-विचार में न हो, अपितु ध्यानपूर्वक देखता हो।

वि : अस्ताचल* के समय हम लोग इसे प्रतिदिन करते हैं।

कृ : अस्ताचल के समय शांत रहिए।

वि : परन्तु मन घूमता रहता है।

---

*'अस्ताचल' का शाब्दिक तात्पर्य है : वह पहाड़ी जिसके पीछे सूर्यास्त होता है। 'ऋषि वैली' में यह शब्द उस समय का संकेत करता है जब विद्यार्थी शांतिपूर्वक बैठकर ऋषि कोण्डा और पश्चिमी पहाड़ियों के पीछे होते सूर्यास्त को देखते हैं।

कृ : हाँ। तो अपने मन का अवलोकन करिए। प्रश्न करिए कि मन क्यों चंचल है। क्यों सोच रहा है। जब आप वहाँ चट्टानों पर बैठते हैं तो आकाश को देखिए, सूर्यास्त को देखिए, उल्लुओं की बोली सुनिये, सड़क, जमीन के रंग को देखिए। वह सब देखिए, सो मत जाइए।

वि : जब हम सूर्यास्त को देखते हैं तो मन में विचार आते हैं। शांत होना संभव नहीं हो पाता है।

कृ : अब रुकिए। मैं वहाँ चट्टान पर अस्ताचल के समय बैठता हूँ या टहलता हूँ और मैं शांत होना चाहता हूँ परन्तु मेरे विचार चलते रहते हैं। अब मैं पूछता हूँ मेरे विचार क्यों चलते रहते हैं— यह नहीं कि 'मैं शांत होना चाहता हूँ।' क्या आप यह अन्तर देखते हैं?

वि : हाँ।

कृ : मुझे इसमें संदेह है कि आप उसे देखते हैं। अगर मैं मन को शांत होने के लिए मजबूर करता हूँ तो यह अनुशासनहीनता है। मैं शांत होना चाहता हूँ परन्तु मेरा मन इधर-उधर भटकता है। अब मैं पता लगाना चाहता हूँ कि मेरा मन क्यों एक के बाद दूसरी चीज की ओर जाता है। पता लगाइए।

वि : जब आप छानबीन करते हैं तब भी आप विचार कर रहे हैं, सर।

कृ : कोई बात नहीं। महत्त्वपूर्ण क्या है?

वि : यह पता करना कि आप क्यों सोच रहे हैं?

कृ : आप शांत होना चाहते हैं और आपका मन सोच रहा है। महत्त्वपूर्ण क्या है?

वि : जब आप सजग हो जाते हैं कि आपका मन विचरण कर रहा है, तो यह फिर आगे विचरण नहीं करता है।

कृ : लेकिन यह फिर भी विचरण करता है। एकाध सेकेण्ड के लिए यह रुक जाता है लेकिन फिर आगे चलने लगता है। अब मेरे प्रश्न को सुनिए— मैं शांत होना चाहता हूँ और विचार आरंभ हो जा रहा है। अब मैं स्वयं से कहता हूँ कि अधिक महत्त्वपूर्ण क्या है? मन को शांत होने देने के लिए बिल्कुल शांत बैठना या यह छानबीन करना कि मेरा मन क्यों विचार-पर-विचार करता जा रहा है? मैं यह जानना चाहता हूँ कि विचार क्यों गतिमान है। यह महत्त्वपूर्ण है, न कि शांतिपूर्वक बैठना। तो क्या होता है? इस छानबीन करने में कि मेरा मन क्यों विचार कर रहा है, मैं शांत हो जाता हूँ, देखता हूँ।

अब मैं कुछ दिनों में जा रहा हूँ। यहाँ मेरा स्थान लेने और आपको प्रेरित करने के लिए कौन आ रहा है? आपको सतत गतिमान रखने के लिए आपकी कौन सहायता करेगा?

वि : यह सब हम लोगों को स्वयं ही करना है। यह सब हम लोगों की जिम्मेदारी है।

कृ : हाँ, परन्तु शुरू में, सुबह आप यह नहीं समझ पा रहे थे। क्या शिक्षक आप लोगों के लिए यह काम करेंगे? आपको जीवन्त रखने

के लिए क्या वे आपकी सहायता करेंगे? अब, यह सब आपकी जिम्मेदारी है कि आप शिक्षकों को जीवंत रखें। यह कहना आपका दायित्व है, सर, आप गतिशील नहीं हैं। जो कुछ मैं कह रहा हूँ क्या आप समझते हैं? क्या आप इसे करेंगे? या आप सोते रहेंगे? (हँसी) जिम्मेदारी दोनों तरफ से है। शिक्षक की तरफ से, साथ-ही-साथ उसकी ओर से भी जो शिक्षक हो रहें हैं— आपलोग। यदि आप निष्क्रिय हो जाएँगे तो वे भी निष्क्रिय हो जाएँगे। तो आप उन्हें सक्रिय होने में सहयोग करिए और वे आपको सक्रिय रहने में सहयोग करेंगे। यह उनका दायित्व है और आपका भी। क्या आपने इसे समझा? तो इसे करिए। क्या आप शांतिपूर्वक बैठना चाहते हैं?

वि : हम लोग शांतिपूर्वक बैठेंगे।

कृ : ठीक, शांतिपूर्वक बैठिए, मुझे बहुत खुशी है।

●

यह पुस्तिका युवाओं के लिए स्वतन्त्रता, उत्तरदायित्व एवं अनुशासन पर कोई प्रवचन नहीं है। इसके विपरीत, यह एक संवाद है जिसमें जे० कृष्णमूर्ति 'ऋषि वैली स्कूल' के बच्चों के साथ जीवन की जाँच-पड़ताल में उतरते हैं। बड़ी सावधानी के साथ वे स्वतन्त्रता, उत्तरदायित्व और अनुशासन के गहरे अर्थों एवं इनके आपसी सम्बन्धों को दर्शाते हैं। चुनाव की स्वतन्त्रता, स्वतन्त्रता नहीं है; उत्तरदायित्व कर्त्तव्य-निर्वाह भर नहीं है; अनुशासन आज्ञाकारिता नहीं है— कृष्णमूर्ति की ये कुछ मौलिक अन्तर्दृष्टियाँ हैं जो विद्यार्थियों, अध्यापकों और अभिभावकों के सामने समान रूप से चुनौती खड़ी करती हैं।

Library IIAS, Shimla
H 181.49 K 897 S
G6087

मूल्य : रुपये 10/-